ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | JULY - 2021

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

भारिया जनजाति में श्रृंगार बोध – छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट के विशेष संदर्भ में

डॉ. धनाराम उइके
सहायक प्राध्यापक इतिहास,
श्री.श्री.ल.ना.शासकीय पेंचव्हेली स्नातकोत्तर
महाविद्यालय परासिया जिला – छिंदवाड़ा (म.प्र.)

शोध सारांश –

भारत देश विविधता का देश है यह न केवल प्राकृतिक तौर पर देखने को मिलती है वरन् भारतीय सामाजिक ताना–बाना भी विविधता लिए हुए है। इसका एक रंग जनजातीय वर्ग है, जो भारतीय समाज का अभिन्न अंग है एवं यहाँ का मूल निवासी है। प्रस्तुत शोध पत्र में देश के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट में रहने वाली विशेष पिछड़ी भारिया जनजाति में श्रृंगार बोध का अध्ययन किया गया है । पातालकोट ऐसी जगह है जहाँ समय रुक सा गया प्रतीत होता है, लेकिन वर्तमान समय में सरकारी प्रयासों से विकास कार्य किये जा रहे हैं । जनजातीय समाज में जिस प्रकार बोली, रहन–सहन, रीति रिवाज एंव संस्कृति अलग–अलग है जिससे उनकी आज भी पहचान बनी हुई है। ठीक इसी प्रकार उनके अपने –अपने श्रृंगार करने की वस्तुऐं, श्रृंगार करने की विधियाँ भी अलग–अलग हैं जो विशिष्ट आकर्षण करने वाली होती हैं जिनके बारे में जानने की सदैव हमारी जिज्ञासा बनी रहती है जिसकी पूर्ति एंव बदलते हुए परिवेश में भी लोग परिचित हो सकें। शोध पत्र का उद्देश्य भारिया जनजाति में परंपरागत श्रृंगार बोध के अध्ययन के साथ ही कालांतर में विभिन्न कारकों के कारण श्रृंगार में हुए परिवर्तन को चिन्हित करना है।

परिभाषिक शब्द – भारिया, विशेष पिछड़ी जनजाति, श्रृंगार, परम्परा, संस्कृति।

प्रस्तावना –

भारत के हृदय में अवस्थित मध्यप्रदेश अपने नाम को चरितार्थ करता है। यह भौगोलिक स्थिति में देश का दूसरा बड़ा राज्य है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यह जनजातियों का गढ़ है। विंध्याचल पर्वत माला एवं सतपुड़ा पर्वत माला, विभिन्न नदियां जनजातियों के निवास के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराते है। मध्यप्रदेश का ही सबसे बड़ा जिला छिंदवाड़ा है जो कि जनजातीय बहुल जिला है। मध्यप्रदेष के दक्षिण–पूर्व स्थित सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में से 21.28 अंष से 22.49 अंष उत्तर अक्षांष और 78.10 अंष से 79.24 अंष पूर्वी देषांतर के मध्य स्थित है।[1] जिले की लंबाई उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग 136 किलोमीटर है तथा पूर्व से पष्चिम की ओर चौड़ाई 104 किलोमीटर है। दक्षिण में जिले की सीमा महाराष्ट्र राज्य के नागपुर और अमरावती जिले के मैदानी भाग से लगती है। उत्तर में नर्मदा घाटी में स्थित जिला होषंगाबाद और नरसिंहपुर इसकी सीमा बनाते हैं। पष्चिम में बैतूल जिला और पूर्व में सिवनी जिला है।[2] जिले के 11 विकासखण्डों में से बिच्छुआ, तामिया, हर्रई, जुन्नारदेव चार विकासखण्ड आदिवासी वर्ग के हैं। छिन्दवाड़ा जिला की कुल जनसंख्या 1,849,283 में से 6,41,421 जनजातियों की है जो कि जिला की कुल जनसंख्या का 34.68 प्रतिशत है। जिले की तीन सबसे बड़ी जनजातियों में गोंड (5,30,485), मवासी (66,420), एवं भारिया, भूमिया आदि (20,890) शामिल हैं।[3] भारिया जनजाति का विस्तार क्षेत्र मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा, सिवनी, मण्डला और सरगुजा (छग) जिले हैं।

इस अपेक्षाकृत बड़े भाग में फैली जनजाति का एक छोटा सा समूह छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट नामक स्थान में सदियों से रह रहा है। पातालकोट की भौगोलिक दुर्गमता में असाध्य जीवन–यापन कर रहे सभ्यता से कोसो दूर ''भारिया'' आज देश विदेश के नृतत्व शास्त्रियों को अध्ययन के साथ ही साथ यह सोचने के लिये भी विवश करते हैं कि इस दुर्गम स्थल में भी जीवन है। मध्यप्रदेश में यहॉ के निवासी ''भारिया'' के नाम से जाने जाते हैं। छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र के भारिया वस्तुतः अत्यन्त गहराई (तलहटी) में लम्बवत् पहाड़ों से घिरे क्षेत्र में रहते हैं। ऊपर से देखने पर इनके घर ''माचिस की डिब्बी'' समान नजर आते हैं।

पातालकोट की प्राकृतिक संरचना –

पातालकोट स्थान को देखकर ही समझा जा सकता है कि यह वह स्थान है जहॉ समय रूक गया प्रतीत होता है। इस क्षेत्र के निवासी शेष दुनिया से अलग–थलग एक ऐसा जीवन जी रहे हैं जिसमें उनकी अपनी मान्यताएँ हैं, संस्कृति और अर्थव्यवस्था है, जिसमें बाहर के लोग कभी–कभार पहुंचते रहते हैं। किंतु जिनसे यहॉ के निवासियों को कुछ खास लेना–देना नहीं। पातालकोट का शाब्दिक अर्थ है : पाताल को घेरने वाला पर्वत या किला। यह नाम बाहरी दुनिया के लोगों ने छिन्दवाड़ा के एक ऐसे स्थान को दिया है जिसके चारो ओर तीव्र ढाल वाली पहाडियाँ हैं। इन वृत्ताकार पहाडियों ने मानों सचमुच ही एक दुर्ग का रूप रख लिया है। इस अगम्य स्थल में विरले लोग ही जाते हैं। ऐसा नहीं है कि इस क्षेत्र में एक ही जनजाति रहती हो वरन् सच तो यह है कि पातालकोट की 90 प्रतिशत आबादी भारिया जनजाति की है, शेष 10 प्रतिशत में दूसरे आदिवासी हैं।[4] इस स्थल की दुर्गमता ने ही यहॉ के आदिवासी जीवन और संस्कृति को यथावत रखने में सहायता दी है।

मानचित्र क्रमांक – पातालकोट की जिला में स्थिति

रसेल एवं हीरालाल के अनुसार 'भारिया' अपनी उत्पत्ति से संबंधित अनेकों कथायें बताते हैं लेकिन इनकी उत्पत्ति के इन कथानकों पर विष्वास नहीं किया जा सकता है।[5] पातालकोट के भारिया कोल समूह के हैं जो न जाने कब से इस क्षेत्र में निवास कर रहे हैं। उन्हें न तो अपनी पुरानी भाषा का ज्ञान है और न ही धर्म का किंतु यही पुराने आस्ट्रिक वर्ग के टूटे समूहों की पहचान भी है। शारीरिक दृष्टि से भारिया जनजाति के सदस्य सामान्यता गहरी मुखाकृति वाले मध्यम और उन्नत कद काठी वाले, श्रम साध्य जीवन जीने वाली जनजाति है। नृतृत्व शास्त्रियों ने इनकी शारीरिक संरचना स्पष्ट तो नहीं की है लेकिन फिर भी पातालकोटवासी भारिया दो तरह के हैं। एक काले तंदुरूस्त कद काठी के लम्बे हाथ पैर वाले। उनकी आंखे बड़ी–बड़ी एवं चमकदार तथा नाक का प्रारंभ चपटा और नथुने बड़े होते हैं। दूसरे प्रकार के भारिया श्वेत वर्ण वाले, पतली, छरहरी काया के नाटे कद के होते हैं जिनकी आंखे सफेद–सफेद धंसी हुई होती है। भारिया जनजाति गौंड

जनजाति के रक्त समूह की होने के कारण इसके मूलतः प्रजातीय लक्षण अब समाप्त हो चुके हैं। सामान्यतः भारिया देखने में अनाकर्षक लगते हैं। प्राकृतिक कठोरता में निवास करने एवं विषम परिस्थितियों में जीवन–यापन से इनकी शारीरिक शक्ति में ह्रास हो रहा है।[6]

पातालकोट क्षेत्र के ग्रामों की बसाहट –

पातालकोट क्षेत्र में लगभग 1200 वर्ग मी. की गहराई में 79 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में 12 ग्राम स्थित है जो कि बिखरे हुए नजर आते हैं। इन ग्रामों के अंतर्गत ढाना भी आते हैं। पातालकोट क्षेत्र के 12 ग्रामों की बसाहट विस्तृत जानकारी निम्नांकित तालिका में दर्शाई गई है –

तालिका क्रमांक – 1
पातालकोट क्षेत्र में 12 ग्रामों की बसाहट का विवरण

क्रं.	ग्रम का नाम	परिवार संख्या		जनसंख्या		कुल जनसंख्या में भारिया का प्रतिशत
		कुल	भारिया	कुल	भारिया	
1	कारेआम रातेड़	103	103	533	533	100
2	चिमटीपुर	26	10	150	51	34
3	घोघरी गुज्जा डोंगरी	01	01	05	05	100
4	खमरापुर सेहरा पचगोल	53	53	351	351	100
5	जडमादल हर्राकछार	42	21	276	132	91
6	सूखाभाण्ड हारमउ	21	21	108	108	100
7	धुरनी मालनी डोमनी	20	08	103	52	50
8	झिरन	01	0	08	0	0
9	पलानी गैलडुब्बा	27	21	137	137	100
10	घटलिंगा	77	49	505	266	53
11	गुढ़ीछतरी	46	45	260	255	98
12	घानासालढाना कौडिया	59	39	350	245	70
	योग	**470**	**371**	**2786**	**2135**	**76.63**

स्त्रोत – विशेष पिछड़ी जनजाति भारिया सर्वेक्षण प्रतिवेदन, वर्ष 2004–05, आदिम जाति, अनुसंधान एवं विकास संस्थान, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल, पृ.क्रं. 12

भारिया जनजाति में श्रृंगार बोध –

श्रृंगार सौंदर्यता का प्रतीक माना जाता है। श्रृंगार का अर्थ किसी भी वस्तु की सुन्दरता से लगाया जाता है। श्रृंगार महिलाओं में वास्तविक सच्चाई को छिपाकर उनकी शोभा (सुन्दरता) में कई गुना वृद्धि करने वाला कारक है। जहाँ गैर जनजातीय समाज की महिलाओं में सामान्यतः लगभग एक समान ही श्रृंगार किया जाता है वहीं जनजातीय समाज में जिस प्रकार उनकी बोली, रहन–सहन, रीतिरिवाज एवं संस्कृति अलग–अलग है जिससे उनकी आज भी पहचान बनी हुई। ठीक इसी प्रकार उनके अपने–अपने श्रृंगार करने की वस्तुयें, श्रृंगार करने की विधियां भी अलग–अलग हैं जो विशिष्ट आकर्षण करने वाली होती हैं। जिनके बारे में जानने की सदैव हमारी जिज्ञासा बनी रहती है जिसकी पूर्ति एवं बदलते हुये परिवेश में भविष्य में भी लोग परिचित हो सकें। किसी भी समाज के लोगों (महिला, पुरूष) द्वारा किये जाने वाले श्रृंगार का अध्ययन को हम दो भागों में बांट सकते हैं–

1. सामान्य श्रृंगार
2. विशिष्ट श्रृंगार

सामान्य श्रृंगार –

सामान्य श्रृंगार का अर्थ प्रत्येक दिन किये जाने वाले श्रृंगार से लगाया जा सकता है। भारिया जनजाति समुदाय में सामान्यतया स्नान करने के पश्चात् पुरूष, स्त्रियां व बच्चे अपने शरीर में मूंगफली, गुल्ली का तेल लगाते हैं। स्त्रियाँ व बच्चे आंखों में काजल लगाते हैं जिससे आंख स्वच्छ व सुन्दर तथा निरोग बने। काजल प्रायः घर में बनाते हैं। परन्तु वर्तमान में कुछ परिवार बाजार से भी काजल खरीद कर ले आते हैं। कुछ परिवारों में काजल नहीं लगाया जाता है जहाँ काला वस्त्र निषेध होता है। वर्तमान में सुहागिन महिलायें माँग में सिन्दूर (कुकू) लगाती हैं। किन्तु सुहागिन वृद्ध महिलाओं में बहुत कम महिलायें सिन्दूर लगाती हैं। पहले माथे पर बूंदा बैंदी का उपयोग करती थी किन्तु वर्तमान में महिलायें (विवाहित स्त्रियां व लड़किया दोनों) बाजार से खरीदी हुई टीकली का उपयोग मांथे पर बेंदी के रूप में करती हैं जिसे ये महिलायें रार (राल) या वट वृक्ष के दूध से लगाती हैं। पूर्व में वृद्ध महिलायें सिर में चोटी बांधने हेतु लाल कपड़े के फीता का उपयोग करती थीं। जबकि वर्तमान में नवयुवतियां जूड़ा एवं कांटे वाली क्लिप का उपयोग करने लगी हैं। ये महिलायें गले में मूंगा मोती की माला का भी उपयोग करती हैं। सुहागिन स्त्रियां व लड़कियां कांच की रंगीन चूड़ियाँ दोनों हाथ में पहनती हैं। इसके अलावा लड़किया प्लास्टिक की चूड़ियाँ भी पहनती हैं।

वर्षा ऋतु में स्त्रियाँ व लड़कियाँ हाथों व पैंरों में ''मेंहदी'' लगाती हैं। जिसे गाँव की ही झाडियों से तोड़कर उसमें कत्था मिलाकर महीन फीसकर लगाते हैं। कुछ लोग इसे सुन्दरता हेतु व कुछ लोग वर्षा ऋतु से जब कीचड़ में पैर व अंगुलियाँ फटने लगते हैं तब औषधि के रूप में लगाते हैं।

श्रृंगार के संबंध में दिनांक 31.05.07 को ग्राम गैल डुब्बा निवासी श्री महेतलाल डांडोलिया (भारती) आत्मज श्री मोहन सिंह, उम्र 35 वर्ष, श्री मुन्नीलाल चलतिया आत्मज श्री बीसूबल उम्र 55 वर्ष, श्री दुकाली चलतिया आदि से मजदूरी करते समय लिये गये सामूहिक साक्षात्कार में बताया गया कि पूर्व में महिलायें केवल माथे पर टीकली लगाती थी। इसके अलावा और कोई श्रृंगार नहीं था।[7]

ग्राम कोड़िया निवासी श्री कमल भारती (डांडोलिया) सहा.शिक्षक द्वारा साक्षात्कार में बताया गया कि महिलाओं में चूड़ियों के रंग का चुनाव गोत्रों के आधार पर माना गया हैं। किसी गोत्र में हरी, किसी गोत्र में लाल तथा किसी गोत्र में सफेद रंग की चूड़ियाँ पहने जाने की प्रथा थी। यहीं धारणा भारिया जनजाति समुदाय द्वारा उपयोग किये जाने वाले कपड़ों के संबंध में भी मान्य है। सफेद रंग बड़े का प्रतीक हैं, हरा रंग मंझले का प्रतीक है तथा लाल रंग छोटे का प्रतीक माना गया है। इनके अनुसार कपड़ों मे हरे, सफेद रंग का उपयोग करने वाले भारिया जनजाति समुदाय के लोग लाल रंग के कपड़े कभी नहीं पहन सकते हैं। जबकि महिलायें पहन सकती हैं। लाल रंग के कपड़े पहनने वाले भारिया जनजाति समुदाय के लोग सभी रंग के कपड़े पहन सकते हैं।[8]

विशिष्ट श्रृंगार –

विशिष्ट श्रृंगार का अर्थ किसी विवाह, त्यौहार, उत्सव एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर किये जाने वाले श्रृंगार से लगाया जा सकता है। इन अवसरों, कार्यक्रमों के अवसर पर सामान्य श्रृंगार के अतिरिक्त लड़कियां व स्त्रियां पैरों में लाल रंग का ''माहुर'' लगाती हैं। कुछ स्त्रियों के दांत में पीतल की कील भी लगी हुई देखी गई। कई स्त्रियां दांत व मसूडों को काला करने हेतु खिरेंटी के पान व कत्था को मिलाकर चबाती हैं जिससे इनके दाँत मसूड़े काले हो जाते हैं। वृद्ध महिलाओं द्वारा लिपिस्टिक का उपयोग नहीं किया जाता है। किन्तु नवयुवतियां लिपिस्टिक का उपयोग करने लगी हैं। छोटे बच्चे होंठ रंगने हेतु कोदों के पत्ते, सागौन के कोमल पत्ते आदि चबाते हैं। वर्तमान में शहरी क्षेत्र में निवासरत नवयुवतियां क्रीम, पावडर, बालों में चोटी क्लिप, जूड़ा आदि का भी उपयोग करने लगी हैं।

पुरूष बाल में मांग निकाल कर कंघी करते हैं। जबकि स्त्रियां कम उम्र में चोटी बनाकर जूड़ा बांधती है। अधिक उम्र की स्त्रियाँ जूड़ा ही बांध लेती हैं। लड़किया प्रायः चोटी ही बनाती हैं।

भारिया जनजाति समुदाय में विवाह के समय दूल्हे का श्रृंगार करते हुए महिलाओं द्वारा गाये जाने वाला गीत–

ऊपर देखो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
जूतो पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
धोती पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।

बगों पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
हुमल पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
पोती पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
गमछा पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।
मौढ़ (मौर) पैरो जी बन्ना बेला चांदनी लगी।

अर्थ– हे दूल्हे राजा। जरा आंगन में देखो, कैसी चांदनी फैली हुई है। तुम अपना श्रृंगार कर लो। जूते, नई धोती, बागो (दूल्हे का विशेष पीला वस्त्र), गले में हुमल (हार) पहन लो, मोतियों से गढ़ी पोती पहन लो। बागो पर गमछा बांध लो और सिर पर छींद का बना हुआ सुन्दर मौढ (मौर) पहन लो। आंगन में चांदनी के फूल बिखरे हुये हैं।

श्रृंगार में परिवर्तन –

संसार में प्रत्येक मनुष्य या समुदाय अपनी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक तथा भौगोलिक परिस्थिति अनुरूप तो जीवन यापन करता ही है, किन्तु परिस्थितियां प्रतिकूल होते हुये भी अपनी सामर्थ्य अनुसार समय के इस बदले परिवेश में ढालना अर्थात् विकास की ओर अग्रसर होते हुये समयानुसार सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक रूप से व्यक्ति/समूह के रहन–सहन ,रीति–रिवाज, जीवन स्तर आदि में नवीन संस्कृति अनुरूप बदलाव आना ही परिवर्तन कहलाता है।

शासकीय विकास कार्यक्रम यथा शिक्षण, स्वास्थ्य, संचार, यातायात के साधन एवं बाह्य संपर्क आदि के प्रभाव के कारण इनके रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, वस्त्र आदि में परिवर्तन धीरे–धीरे हो रहा है। पहले लोग प्रतिदिन स्नान नहीं करते थे। अब शिक्षण के प्रसार के कारण कई लोग प्रतिदिन स्नान करते हैं तथा शरीर से मैल निकालने के लिये पत्थर के स्थान पर साबुन का उपयोग करने लगे हैं। कपड़े साफ करने के लिये साबुन, डिटरजेंट पाउडर व कपड़े धोने का सोडा का उपयोग करने लगे हैं।

महिलाओं द्वारा किये जाने वाले श्रृंगार में भी परिवर्तन आया है। पहले महिलायें मांग में सिन्दूर का उपयोग नहीं करती थी एवं चोटी हेतु लाल कपड़े का फीता का उपयोग करती थी वहीं वर्तमान में महिलायें अन्य समाजों की भांति मांग में सिंदूर एवं चोटी में कांटे वाली क्लिप, जूड़े आदि का उपयोग करने लगी हैं तथा साथ ही क्रीम, पावडर का भी उपयोग करने लगी हैं।

निष्कर्ष –

पातालकोट की भारिया जनजाति प्राकृतिक दुर्गमता के कारण बहुतहद अपनी सांस्कृतिक विरासत को सम्भले हुए है। आज जहां संसार में सामाजिक, आर्थिक स्तर में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है जबकि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सामाजिक, आर्थिक स्तर में परिवर्तन बहुत धीमी गति से हो रहा है। जिसका उदाहरण पातालकोट क्षेत्र में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजाति भारिया में देखने को मिलता है। पातालकोट क्षेत्र में निवास करने वाली भारिया जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित किया गया है। यही वजह है कि उनमें आज भी कुछ पारम्परिक परम्परायें विद्यमान है, जो आज हमें उनकी अपनी संस्कृति से परिचित कराती हैं।

कोई भी समाज चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, ग्रामीण हो या शहरी, कृषक समाज हो या औद्योगिक इनमें परिवर्तन की क्रिया चलती रहती है, किन्तु किसी में परिवर्तन की क्रिया तीव्र होती है किसी में अत्यन्त मन्द। भारिया जनजाति के विकास हेतु म.प्र. शासन, केन्द्र शासन व कई स्वयं सेवी संस्थायें कार्य कर रही है।इनके प्रयासों से आर्थिक, शैक्षणिक विकास हुआ है। भारिया जनजाति समूह में आज भी कुछ पारम्परिक परम्परायें, सामाजिक मान्यतायें परिधान, आभूषण, श्रृंगार, गुदना आदि की प्रथा विद्यमान है। भारिया जनजाति समाज में गुदना गुदवाने की प्रथा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। वर्तमान में शिक्षित लड़कियां एवं नवयुवतियां गोदना नहीं गुदवाती हैं।

संदर्भ –

1. तिवारी, कपिल देव–छिन्दवाड़ा दर्पण, अरूणोदय प्रकाषन नई दिल्ली, 2009, पृ.क्रं. 77

2. विकास यात्रा, दैनिक भास्कर द्वारा प्रकाषित– छिन्दवाड़ा जिले के विकास पर केन्द्रित विषेष पत्रिका, पृ. क्रं. 12
3. Source : Censns of india 2001
4. तिवारी, डॉ. शिवकुमार, शर्मा डॉ. श्रीकमल – म.प्र. की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2007 पृष्ठ क्र. 130
5. दीक्षित, डॉ. ध्रुव कुमार – पातालकोट घाटी का भारिया जनजीवन, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2010. पृष्ठ क्रं. 22
6. दीक्षित, डॉ. ध्रुव कुमार – पातालकोट घाटी का भारिया जन जीवन, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2010 पृष्ठ क्र. 23
7. रिपोर्टः भारिया जनजाति समूह के परिधान, आभूषण एवं श्रृंगार का अध्ययन, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, म.प्र. शासन, भोपाल, 2007–08 पृ.क्र. 58
8. वही